International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-08-2025, Accepted: 08-09-2025, Published: 23-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 93-96

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता–विशेष संदर्भ चन्ना

निधु कुमारी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
चन्ना उपन्यास में स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की ओर भी इशारा कर रहा है। चन्ना का व्यक्तित्व उन सभी स्त्रियों के लिए प्रेरणा स्रोत है, जो अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती है। भारत में पितृसत्ता समाज में हर परिवार अपना वंश आगे बढ़ाने के लिए बेटे की कामना करता है। जैसे चन्ना में भी शाह जी और श्यामा करते हैं, उन्हें लगता है कि लड़की तो केवल घर ही संभाल सकती है, पर चन्ना ने उन सब दायित्वों को पूरी तरह तटस्थता के साथ पूरा किया, जो एक बेटा कर सकता है ।

मूल शब्दः आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता, नारी संघर्ष, मुमानियत, परिपेक्ष्य, निर्भीक

परिचय

प्रस्तुत शोध कृष्णा सोबती के चन्ना उपन्यास को संदर्भ बना कर उनकी कथा साहित्य में स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। हिंदी साहित्य में कृष्णा सोबती का नाम स्त्री चेतना और सामाजिक विद्रोह की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है। उनकी अधिकतर रचनाओं में नारी को केंद्र में रखा गया है। चन्ना उनका पहला उपन्यास है।जो विभाजन के बाद 1950 में लिखा गया पर प्रकाशित न हो पाया क्योंकि प्रकाशक द्वारा भाषा में कुछ परिवर्तन करने के कारण कृष्णा सोबती जी ने उस उपन्यास को वापस ले लिया और उसे एक बक्से में बंद कर दिया। करीब 65 वर्षों के बाद राजकमल प्रकाशन ने इस उपन्यास को प्रकाशित किया और जनवरी 2019 में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में इस उपन्यास का विमोचन हुआ। चन्ना के संदर्भ में सारे वाद विवाद की बात सोचते हुए, सोबती जी कहती हैं कि "भाषा की जड़ों को हरियाने वाला रसायन जो उसे जिंदा रखता है, उसे सम्पन्न करता है, वह 'लोक' का स्रोत है, भाषाओं के साथ साथ भाषाएं और बोलियाँ विकसित होती है और आपसी टकराहट से समृद्ध होती है और समय में हो रहे परिवर्तनों को भी साधती है। अब और तब की हिंदी में बहुत अंतर है। आज की हिंदी ने दूसरी भारतीय भाषाओं और बोलियों से शब्द लेने शुरू कर दिए हैं, जिससे उसका कोष समृद्ध हुआ है।सोबती जी ने इस उपन्यास की भूमिका में फणीश्वरनाथ रेणु जी के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है, जिन्होंने देश के खेतिहर संवाद को 'मैला आंचल' में प्रस्तुत किया और बोलियों की संक्षिप्तता को साहित्यिक स्वरूप दे दिया।" सोबती जी अपने उपन्यास 'जिन्दगीनामा' जिसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, के लेखन का कारण भी कहीं न कहीं अपनी भाषा में परिवर्तन के कारण अप्रकाशित रही 'चन्ना' को माना है।

साहित्यिक विश्लेषणः सोबती जी का यह उपन्यास 'चन्ना' भारतीय समाज में स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और अस्तित्व की खोज को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास की नायिका 'चन्ना' पारंपरिक स्त्री छवि से अलग है । वह गांव में अपने नाना–नानी के लाड प्यार में पली बढ़ी और शहर में पढ़ी लिखी वहां के रंग में ढल गई,पर स्वयं को उसने गांव से कभी अलग नहीं किया । यह स्पष्ट होता है, जब वह शहर में रहती है और एक शाम उसके कमरें में अंधेरा देखकर सईदा बीबी कहती है, "बच्ची, बिजली नहीं जलाई? किसी नौकर से कह दिया होता"।

"नहीं सईदा बीबी, यहाँ लालटेन क्यों नहीं जलाते? बिल्कुल अपना गांव का घर लगेगा। दीया जलाओ, सईदा बीबी!" सईदा बीबी ने कितना समझाया, पर लड़की मानी नहीं।

"नहीं–नहीं बच्ची ,माँ गुस्सा होंगी।" चन्ना को इसमें माँ के गुस्सा होने का कोई कारण नजर नहीं आया और आखिर माँ की अनिच्छा होते हुए भी दिया जलाकर छोड़ा।" वह न केवल समाज द्वारा निर्धारित नियमों को तोड़ने का साहस रखती है, बल्कि अपनी शर्तों पर जीवन जीने के लिए संघर्ष करती है।

ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण हो, स्त्री विमर्श कहलाता है। और चन्ना उपन्यास में भी स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण किया गया है। हिंदी कथा साहित्य में नारी मुक्ति को लेकर स्त्री विमर्श की गूंज 1960 ई में पश्चिम में हुई थी, जिसमें चार नाम मुख्य रूप से चर्चित है– उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और शिवानी। इन्होंने नारी के मन की शक्ति को पहचाना और उनका विश्लेषण किया। स्वातंत्रयोत्तर हिंदी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहाय जी ने नारी जीवन का वास्तविक चित्र खींचा है। उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद की स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को अपना विषय बनाया है। वह कहते हैं– जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता' कहा जाता था। आज वही नारी अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वह अपनी कविता 'नारी' में कहते हैं,

"नारी बेचारी है,
पुरुष की मारी,
तन से क्षुदित है,
लपककर झपककर
अंत में चित्त है।"

प्रस्तुत पंक्ति में कवि सहाय जी ने नारी को बेचारी कहकर उसकी दयनीय स्थिति का वर्णन किया है, जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नहीं पाती। लेकिन वर्तमान में यह स्थिति परिवर्तित नजर आती है। वंदना वीथिका के शब्दों में, "नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था। पर आज स्थिति परिवर्तित हुई है। आज हर क्षेत्र का द्वार लड़कियों के लिए खुला है वे हर जगह प्रवेश पाने लगी है। जमीन से आसमां तक पृथ्वी

से चाँद तक उनकी पहुँच है जैसे कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स।"

हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श का ज़ोर आठवें दशक तक आते– आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक की महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय हैं– ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, मृणाल पांडे,मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान,क्षमा शर्मा, रमणिका गुप्ता आदि। इन सभी लेखिकाओं ने नारी मन की गहराइयों, अन्तर्द्वन्दों तथा अनेक समस्याओं का बड़े ही संजीदगी के साथ वर्णन किया है।

नारी अस्तित्व को लेकर अपने अपने समय पर कई विद्वानों ने चिंता व्यक्त भी की है। मैथलीशरण गुप्त जी ने 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आँखों में पानी' कह कर नारी की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है। प्रसाद जी ने 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' कहा है तो शेक्सपियर ने 'दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है , आदि कहकर नारी अस्तित्व को संकीर्ण बताया है।

लेकिन अब स्थिति बदल गई है। हिंदी कथा साहित्य लेखिकाओं ने अपने अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को अपना विषय बनाया है। अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती की मित्रों मरजानी और चन्ना, मन्नू भंडारी की आपका बंटी, ममता कालिया की बेघर, मृदुला गर्ग की कठगुलाब, मैत्रेयी पुष्पा की चाक एवं अल्मा कबूतरी आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है।

"सोबती– वैद संवाद में स्त्रीवाद और स्त्री लेखन पर विचार करते हुए कृष्णा जी ने अपनी धारणा स्पष्ट की है कि रचनात्मक कर्म में स्त्री और पुरुष में भेद नहीं किया जाना चाहिए। हमारे समाज को उनकी भिन्नताओं के साथ साथ उनकी समानताओं को देखने की भी आदत होनी चाहिए।"

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों चन्ना ,दिलों दानिश, मित्रो मरजानी आदि में नारी चेतना के विविध आयामों को उभारा है। उनकी साहित्यिक रचनाओं में आधुनिक नारी का रूप भी देखने को मिलता है। 'दिलोदानिश' उपन्यास की पात्र– छून्ना एक विधवा है। उसके मायके और ससुराल वाले चाहते हैं कि वह एक साध्वी सा जीवन व्यतीत करें। छुन्ना के शब्दों में "अपने से उम्मीद यही की जाती है कि पूजा ध्यान में दिल लगाएं, व्रत करें, तीर्थ करें, तीर्थों को जाए। अपने अंदर बाहर की तरंगों को शांत कर विधवा बन जाए। पहनने ओढ़ने की मुमानियत।" लेकिन छुन्ना एक आधुनिक सोच रखने वाली महिला हैं। उसे इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। वह स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता में विश्वास रखती है। उसकी माता बऊआजी भी उसे यही सलाह देती हुई कहती हैं "यह कतइयत न तुम्हारे हाथ में और ना हमारे। कलाइयाँ सूनी हो जाएं, तो उम्र भर की लानत –मलामत। ऐसे में कान–आंख मूंदकर ही अंगुलियों के बल चलना होता है। बहुतेरी पड़ी हैं ऐसी। हमारी मानो तो सत्संग– पूजा में मन लगाओ छुन्नी, उसी से वक्त कटेगा।।" इन सबके बावजूद छून्ना अपना जीवन अपने शर्तों पर जीती है। वह दिल लगाने को ग़ज़ल गाती है, तीन पत्ती खेलती है। वही दिलोदानिश की अन्य महिला पात्र कुटुम्ब प्यारी और महकबानो भी अपने– अपने अधिकारों को लेकर सजग हैं और उन अधिकारों के लिए वह लड़ने से भी नहीं कतराती। सब अपनी एक स्वतंत्र पहचान हासिल करती है।

'मित्रों मरजानी' की मित्रों भी एक आधुनिक सोच रखने वाली नारी है। वह अपनी इच्छाओं को खुलकर सबके सामने रखती है। वह अपनी सास, जेठानी व ससुराल के अन्य सदस्यों से बहुत प्रेम करती हैं और उनका सम्मान भी करती है। यह इस बात से स्पष्ट होता है, "जब गुलजारीलाल मित्रों का देवर कपट– फरेब करके बाजार से तीन हजार रूपए का कर्ज लेता है। तो मंझला भाई सरदारी लाल काफी परेशान रहता है, उसे परेशान देखकर मित्रो अपनी संदूकची निकालकर उसे दे देती है।" फिर भी वह किसी भी प्रकार के बंधन को स्वीकार नहीं करती, बस स्वतंत्र जीवन जीना चाहती।

चन्ना का पारिवारिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य भारत के उस समय का है, जब दुनिया की अग्रणी मुल्कों में भी स्त्री स्वतंत्रता की बहुत सुगबुगाहट नहीं थी, लेकिन चन्ना ठीक उन्हीं अर्थों में आधुनिक हैं, जिन्हें हम आज जानते हैं। पैदाइश के वक्त ही माँ की छाया से वंचित, पिता के स्नेह से दूर, नाना –नानी की प्यार तले पली बढ़ी चन्ना आजाद ख्याल है, शिक्षित है, और सबसे ज्यादा ध्यान देने लायक यह है कि वह अपने अधिकारों को लेकर सजग है। और यह अधिकार उसके व्यक्तित्व की हदों तक सीमित नहीं, उन जमीनों और खेतों तक फैला है, जिन्हें वह अपने पुरखों की ओर से मिला दायित्व भी मानती है। चन्ना की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं

1. चन्ना–आत्मनिर्भरता का प्रतीक

चन्ना समाज की रूढ़ियों के विपरीत चलने वाली महिला हैं। वह अपनी पहचान को केवल विवाह और मातृत्व के दायरे में सीमित नहीं करना चाहती। रोना उसे पसंद नहीं।उसकी आत्मनिर्भरता इस बात से भी पता चलती है कि वह किसी के कहने से निर्णय नहीं लेती। वह अपने जीवन के अहम फैसले स्वयं करती है। एक बार गर्मियों की छुट्टियों में श्यामा और धर्मपाल कश्मीर जाने की योजना बनाते हैं, तो चन्ना भी जिद करती है जाने की कि "तुम्हारे साथ मैं भी चलूँगी माँ"। श्यामा को नई चिंता ने घेर लिया । बोली "बेटी, गांव में शाहजी इंतजार में होंगे, वह तो मानेंगे नहीं?" "मां, मैं तो जरूर जाउंगी। नाना जी को मैं आज अपने आप खत लिखूंगी।"

इस उपन्यास में चन्ना को एक ऐसी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने मनोभावों और इच्छाओं को दबाती नहीं है, अपितु खुलकर सबके सामने व्यक्त करती है।

चन्ना ने अपने पिता का व्यापार स्वयं संभालने का निर्णय किया। धर्मपाल और श्यामा की मृत्यु के पश्चात उनके मुंशी रामनाथ जी ने चन्ना को बताया कि व्यापार की निगरानी रखना अब जगदीश के बस का काम नहीं। "चन्ना ने मन में सोचा की मामू नहीं तो मैं तो कर सकती हूँ।" पर रामनाथ का ध्यान तो उधर गया ही नहीं। लड़की के व्यापार करने की बात चन्ना के अतिरिक्त और कौन सोच सकता है?

2. स्त्री की स्वतंत्रता और सामाजिक बंधन

चन्ना सामाजिक बंधनों से बंधी नहीं रहना चाहती थी। वह अपने प्रेम, यौनिकता और जीवनशैली के बारे में स्वयं निर्णय लेने के पक्ष में थी। वह पारंपरिक विवाह व्यवस्था पर सवाल उठाती है और उसे स्त्री की स्वतंत्रता का बाधक मानती है। श्यामा ने उसका विवाह कराना भी चाहा पर चन्ना को स्वीकार नहीं था। श्यामा चन्ना से कहती है कि "चन्ना आज रामलाल जी कुछ कहते थे।"

"हाँ माँ" चन्ना ने कहा।

"तो फिर क्या निश्चय किया,चन्ना, उनसे कुछ कहने के पहले तुमसे पूछना 'भी' तो जरूरी है।"

"चन्ना ने मन में सोचा– मां 'भी' के स्थान पर 'ही' का प्रयोग करती तो कुछ अर्थ निकलता। प्रत्यक्ष बोली माँ कोई ऐसी बात नहीं, तुम पूछोगी क्या? बलवंत के लिए ऐसा कभी कुछ सोचा नहीं।" वह तो स्वतंत्र जीवन जीना चाहती थी। कृष्णा सोबती जी ने इस उपन्यास में दिखाया है कि किस तरह हमारा समाज एक स्वतंत्र सोच रखने वाली स्त्री को स्वीकार करने में असमर्थ रहता

है। उपन्यास में कई बार चन्ना को उसकी नानी, चाची महरी, सईदा बीबी और श्यामा द्वारा समझाया जाता है कि इस तरह का व्यवहार मत करो, लड़कियों की तरह रहो। पर चन्ना किसी के कहने से अपना व्यवहार नहीं बदलती। वे स्त्रियों के दुख से अनजान भी नहीं है। वह बच्चों के मुख से गोमा के लिए गाए गए टप्पो में इस दुख को सुनती भी है "ओ बागों की ओट में खड़ी मेरी माँ, तू मुझे देख ना रो।लड़कियों के दुख ही ऐसे हैं"।

3. पुरुष प्रधान समाज से टकराव

हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है।यह बात इस उपन्यास में भी देखने को मिलता है जब शाहजी अपनी वंश को लेकर चिंतित रहते हैं। वह अपने बेटे की चाह पूरी ना हो पाने पर दुखी होते हैं और फिर बेटी को भी जब बेटी ही होती है, तो उसे अपना भाग्य मानकर पूरे गांव में मिठाई यह कहते हुए बंटवाते हैं कि 'लड़कों सी लड़की' आयी है। चन्ना की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता उसे पुरुष प्रधान समाज से टकराने के लिए मजबूर करती है। यह इस बात से चित्रित होता है जब चन्ना शाहजी को कहती है "नानाजी इस बन्ते को आप कचहरी बुलाकर ठीक करें, अभी साल भर हुआ चाची कहती थी कि पत्तों की बाले हिसाब में छोटी की है। शाह जी ने स्नेह से लड़की की ओर देखा जैसे कहते हों, ठीक कहती हो बेटी यही तो मैं करूँगा। आज लड़की के मुँह से बन्ते को सबक देने की सलाह ने उन्हें नया विश्वास दिया। चन्ना से तो कुछ अधिक नहीं कहा, लेकिन उन्हें मान हुआ,कि चन्ना की आवाज में यह उनकी परंपरा है, जो उनके बाद भी जीवित रहेगी।" वह प्रेम को केवल शारीरिक या भावनात्मक बंधन के रूप में नहीं देखती बल्कि इसे बराबरी के स्तर पर जीना चाहती है। उसके विचार पुरुष पात्रो को असहज कर देते हैं क्योंकि वे एक स्वतंत्र स्त्री को अपने अनुसार ढालने में असफल रहते हैं। अक्सर जो पुरुष उसके प्रति आकर्षित होते हैं, पूरी तरह उसे या तो समझ नहीं पाते या उन्हें कुछ अजीब सा लगता है। उन्हें लगता है कि वह उन्हें ढील दे रही है पर फिर वह उन्हें रोक देती है। चन्ना बड़े से बड़े फैसले लेने में नहीं हिचकिचाती। जब उसे अपने नाना के लिए फैसले लेने थे तो भी वह घोड़े पर सवार होकर खेतों का मुआयना कर लिया करती थीं। वह एक जमींदार की भांति सारे फैसले लिया करती थी। धर्मपाल की मरणोपरांत जब श्यामा के भाई जगदीश ने उनकी गाड़ीयों को बेचना चाहा, तब भी बड़े अधिकार के साथ वह कहती है "माँ देना चाहती है या नहीं, मैं नहीं जानती, लेकिन मामू पिताजी की कार कहीं बाहर नहीं जाएगी"।

4. स्त्री विमर्श की दृष्टि से चन्ना का महत्त्व

यह उपन्यास नारीवादी चेतना को प्रकट करता है और स्त्री की आत्मनिर्भरता को एक नए सन्दर्भ में प्रस्तुत करता है। चन्ना न केवल निडर, विद्रोही और आजादख्याल स्त्री है, बल्कि वह एक ऐसी स्त्री है जो अपनी पहचान स्वयं बनाना चाहती है। कृष्णा सोबती ने इस चरित्र के माध्यम से स्त्री की स्वतंत्रता और सामाजिक स्वीकार्यता के बीच के संघर्ष को गहराई से उकेरा है। हमारे पितृसत्तात्मक समाज में जहां पिता के बाद उसका उत्तराधिकारी पुत्र को घोषित किया जाता है, वहीं चन्ना एक स्त्री होकर समाज की इन रूढ़ियों को तोड़कर अपने ननिहाल और अपने पिता के घर के कर्त्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाना अपना अधिकार समझती है। चन्ना का व्यक्तित्व व्यवहारिक होकर भी संवेदनशील है। और बहुत अनुभवी भी जो केवल अपनी मां के पत्र पढ़कर उसका पूरा व्यक्तित्व समझ जाती है। वह कमल से कहती है "कभी कभी सोचती हूँ बड़ी माँ अच्छी, बहुत प्यारी होंगी। इसलिए नहीं कहती हूं कि वह मेरी माँ थीं। उनके पत्रों को पढ़कर लगता है कि उनका अध्ययन कितना गहरा था और पकड़ कितनी तेज थी। केवल जो नहीं था उनके पास वह अपने अधिकारों की मांग नहीं थी। चुप– चाप मूक भाव से अपने को पन्नों में लिख जाने का ज्ञान माँ में था। तो क्या पिता को एक उलाहना देने की समझ ना होगी? यह कैसे कहा जाए।"

चन्ना उपन्यास की अन्य स्त्री पात्र

चन्ना की माँ शीला बहुत शांत स्वभाव और शील व्यवहार की थी। जब धर्मपाल दूसरा विवाह करके श्यामा को लेकर आता है तो उसे उतना दुख नहीं होता और वह धर्मपाल से विद्रोह करने के बजाय परिस्थितियों को स्वीकार कर लेती है। पर जब धर्मपाल श्यामा से विमुख हो शीला की तरफ दोबारा आकर्षित होता है,तब शीला के आत्मसम्मान को चोट पहुंचती है और वह अपने मायके जाने का निर्णय लेती है। उसे अपने आत्मसम्मान की रक्षा करना ज्यादा बेहतर लगा, बजाए अपने पति के साथ रहने की।

शीला के मन में श्यामा के लिए कोई ग्लानी नहीं थी, वह तो उसे छोटी बहू कहकर संबोधित करती है। वह नहीं चाहती थी, कि स्त्री होकर वह दूसरी स्त्री के साथ अनुचित व्यवहार करें। वह चाहती थी, कि श्यामा को वह सब अधिकार मिले, जितना उसे मिला है, उसे भी बहू वाला सम्मान मिले। शीला को श्यामा कभी भी गलत नहीं लगी। उसके मन में श्यामा के लिए कभी भी द्वेष नहीं रहा। वह तो धर्मपाल को दोषी मानती थी, जिसने विवाहित होने के पश्चात भी श्यामा से विवाह किया। शीला ने श्यामा और धर्मपाल को एक साथ करने का हमेशा प्रयत्न किया। यह उपन्यास में भी कई जगह देखने को मिलता है, जैसे शीला धर्मपाल के साथ शाम की चाय पीने के लिए श्यामा को भी बुलाती है। और जब श्यामा आती है तो शीला उठकर कमरे के द्वार से श्यामा को हाथ पकड़कर अंदर ले आई, "आओ आओ, छोटी बहू इधर बैठो न और शीला ने श्यामा को पति के साथ बैठने का संकेत किया"।

शीला की शिक्षा दीक्षा किसी आधुनिक घराने में नहीं हुई थी, फिर भी उसकी रुचि में निखार था, उसे कला का ज्ञान था। उसके इस कौशल के बारे में श्यामा को तब ज्ञात होता है,जब वह पहली बार उसके कमरे में जाती है। वहां का सामान और सजावट देखकर वह दंग रह जाती है। "साज सामान तो श्यामा के कमरे में भी कम न था पर यहाँ कला थी, सुंदरता थी। जब शीला नई ब्याही आई थी, तो एक बार नए सिरे से अपनी रुचि से अपना घर सजाया था। वह किसी भी रस रंग से अछूती नहीं रह सकी"।

शीला अपनी सादगी से सबका दिल जीत लेती है। वह सबको सम्मान और प्यार देती है। उसे अपने जमींदारी का कोई घमंड नहीं, पैसों का कोई स्वार्थ नहीं, वह सादगी में ही विश्वास करती है। जब वह अपने मायके आई, तो गांव भर के लोगों ने उसका 'सिरवारना' किया। उसकी सहेलियां कहती हैं –"वह राम सिंह पटवारी की लड़की रम्मो ब्याह के बाद कैसे बदल गई है। यह नहीं कि अमीर घर ही गई हो, घरवाला किसी कपड़े की दुकान पर नौकर है, पर पिछले फेरे आई तो चढ़– चढ़कर अपने कपड़े ही दिखाती रही। एक इसे देखो, आगा –पीछा भरा– भराया है, पर सबसे गले मिली है। और सचमुच शीला ने ऐसी टीका– टिप्पणी के लिए कोई अवसर नहीं दिया"।

श्यामा एक आधुनिक और फैशनेबल स्त्री है। उसे किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। जब चाची महरी चन्ना से मिलने आई तो वह श्यामा से भी मिलने उसके कमरे में गई। "श्यामा बैठी हुई किताब पढ़ रही थी। चाची को आते देख, किताब बंद कर दी।... उसके हाथ में किताब देखकर चाची ने सोचा कि अभागिन है, नहीं तो ब्याह के इतने साल बाद भी क्या किसी को पढ़ना सूझता है?"

श्यामा अनुशासन प्रिय है। उसे घर की साफ– सफाई और सामान को उसकी सही जगह रखने का बहुत ध्यान रहता है। वह चन्ना को भी यह सब अच्छी आदतें सीखाती रहती है।कि

"चन्ना जिस चीज़ की जो जगह हो, उसे वही रखना चाहिए। ऐसी बिखरी हुई चीजे अच्छी नहीं लगती"। श्यामा की अपनी कोई औलाद नहीं है। इसीलिए चन्ना को देखकर उसका मातृत्व जाग जाता है। वह चन्ना की अपनी मां नहीं, फिर भी उसे हमेशा अपनी मां सा ही प्यार देती है और मां के अधिकार से डांटती भी है । यह इस बात से स्पष्ट है जब चाची महरी सईदा बीबी से पूछती है कि लड़की अर्थात चन्ना के साथ उसका व्यवहार कैसा है? तो सईदा बीबी कहती है –"अपनी माँ जैसी होती है, वह वैसी नहीं और पराई जो होती है, वह वैसी बुरी भी नहीं"।

सईदा बीबी और चाची महरी कहने को तो शाहजी के घर की परिचारिकाएं हैं, पर घर की मालकिन की तरह रहतीं हैं। घर के हर काम में उनकी सलाह मानी जाती है। शीला और चन्ना से संबंधित निर्णय लेने में उनकी समान भागीदारी होती है। उन दोनों ने उन्हें अपनी बेटियों जैसा प्यार दिया। चन्ना के जन्म के बाद जब शीला की मृत्यु हो जाती है तो शाहनी रोते हुए बच्ची को सईदा बीबी की गोद में डाल देती है। वही उसका पालन–पोषण करती है और चन्ना भी सईदा बीबी में ही अपनी मां को देखती है।

निष्कर्ष

चन्ना उपन्यास में स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की ओर भी इशारा कर रहा है। चन्ना का व्यक्तित्व उन सभी स्त्रियों के लिए प्रेरणा स्रोत है, जो अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती है। भारत में पितृसत्ता समाज में हर परिवार अपना वंश आगे बढ़ाने के लिए बेटे की कामना करता है। जैसे चन्ना में भी शाह जी और श्यामा करते हैं, उन्हें लगता है कि लड़की तो केवल घर ही संभाल सकती है, पर चन्ना ने उन सब दायित्वों को पूरी तरह तटस्थता के साथ पूरा किया, जो एक बेटा कर सकता है ।वह निडर है, निर्भीक है। और अपना निर्णय लेने की क्षमता उसमें बखूबी हैं। चन्ना गांव में रहकर भी वास्तव में एक आधुनिक स्त्री है। यह उपन्यास स्त्री विमर्श के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में देखा जा सकता है, जो यह प्रश्न करता है कि क्या समाज एक स्वतंत्र स्त्री को स्वीकार करने के लिए तैयार है?

संदर्भ ग्रंथ

1. सोबती, कृष्णा, चन्ना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन : 2019, पृष्ठ 5
2. वही पृ–161
3. सहाय, रघुवीर, नारी कविता, कविता कोश में संकलित,1954
4. आजकल: मार्च 2013, पृष्ठ – 27
5. सोबती, कृष्णा एवं कृष्ण बलदेव वैद, सोबती दृ वैद संवाद, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन:2007, पृष्ठ –5
6. सोबती,कृष्णा,दिलो –दानिश,नई दिल्ली :राजकमल प्रकाशन:1993, पृष्ठ –56
7. वही, पृष्ठ –121
8. सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी,नई दिल्ली :राजकमल प्रकाशन:1967, पृष्ठ –53
9. सोबती, कृष्णा, चन्ना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन: 2019, पृष्ठ– 56
10. वही, पृष्ठ 376
11. वही, पृष्ठ –271
12. वही, पृष्ठ –296
13. वही, पृष्ठ –360
14. यादव,राजेंद्र, औरों के बहाने, नई दिल्ली :राधाकृष्ण प्रकाशन: 2014, पृष्ठ– 41